चित्त निरोध की कला सीखें : आचार्य महाप्रज्ञ

आठ दिवसीय प्रेक्षाध्यान शिविर शुरू

बीदासर 11 फरवरी।

युगप्रधान आचार्य महाप्रज्ञ के सान्निध्य व तुलसी अध्यात्म नीडम के बेनर तले आठ दिवसीय प्रेक्षाध्यान शिविर का तेरापंथ भवन स्थित श्रीमद् मघवा समवसरण में बुधवार को शुभारंभ हुआ। शुभारंभ समारोह को संबोधित करते हुए आचार्य महाप्रज्ञ ने धर्मसभा में कहा - इंद्रियां सिर्फ ज्ञान का साधन है, इससे कामनाओं को बल नहीं मिलता। लेकिन आदमी जब तक चित्त को निरोध करने की कला नहीं जान लेता तब तक राग और द्वेष की धारा को मोड़ा नहीं जा सकता। इंद्रिया राग और द्वेष की गंदी धारा से जुड़कर वासना का प्रदुषण फैलाती है। आचार्य महाप्रज्ञ ने जैनागम की भाषा में चित्त निरोध को प्रतिसंलिनता बताते हुए कहा - आत्मा के भीतर प्रवेश के लिए आवश्यक है चित्त को परम से जोड़ना। जब तक आदमी इन्द्रियों का नौकर बना रहता है। तब तक मुक्ति उससे कोसों दूर रहती है और जिस क्षण वह इंद्रियों का मालिक बना, कामनाओं की जंजीरों को तोड़कर शाश्वत सुख को पाने का रास्ता साफ हो गया। आचार्य ने आगे कहा - सुख और दुःख का कर्त्ता मनुष्य स्वयं है। जीवन जीने का मतलब यह कतई नहीं कि जो इच्छा पैदा हो उन्हें पूरी करते चले जाये ऐसा करना दुःख का ताना-बाना बुनना है। जो दुःख से हमेशा-हमेशा के लिये मुक्ति चाहते हैं, उन्हें ''आत्मा भिन्न है : शरीर भिन्न है'' इस भेद विज्ञान की अनुप्रेक्षा करनी चाहिये।

युवाचार्य महाश्रमण ने उपस्थित शिविरार्थियों को प्रेक्षाध्यान उपसम्पदा का संकल्प करवाते हुए कहा कि दवा के साथ जिस तरह अनुपान अनिवार्य है ठीक उसी तरह ध्यान के लिये मिताहार, मितभाषण प्रतिक्रिया, विरतीत्र भावक्रिया और मैत्री उपसम्पदा की चर्या आवश्यक है। युवाचार्यश्री का मानना था कि मन की चंचलता हमारे भावों की दुनिया को तरंगीत कर देती है। आदमी करता कुछ है और सोचता कुछ और है, आदमी अभ्यास करे कि तन और मन की क्रिया को एक बिंदू पर लाकर टिका दे तो जीवन की बहुत सारी समस्यायें समाहित हो जायेगी। ध्यान सिर्फ गुफा में आंख बंद कर बैठ जाना नहीं है, ध्यान का मतलब है जो भी काम करे मन को उसी काम में नियोजित कर देना। युवाचार्यश्री ने कहा कि उपसम्पदा के ये पांच सूत्र अगर जीवन शैली के अंग बन जाये तो जीवन परम पुनीत बन सकता है। अहिंसा के प्रतिष्ठा होते ही वैर की भावना अपने आप दूर हो जाती है।

प्रेक्षाप्राध्यापक मुनि किशनलाल ने आठ दिवसीय प्रेक्षाध्यान शिविर के शुभारंभ के अवसर पर शिविर की जानकारी देते हुए कहा कि प्रेक्षाध्यान एक ऐसी पद्धति है जो आत्मा से आत्मा का साक्षात्कार करवाकर परम की तरफ ले जाती है। मुनिश्री ने उद्घाटन सत्र में प्रायोगिक प्रशिक्षण दिया।

मुनियों ने किया विहार

तेरापंथ धर्मसंघ के 145वें मर्यादा महोत्सव के बाद चार्तुमासों की घोशणा के साथ ही विहार की कड़ी में तेरापंथ दर्शन मनीषी मुनि सुमेरमल ''लाडनूं'' मुनि उदित कुमार ने लुधियाना, शासन गौरव मुनि ताराचन्द, मुनि सुमतिकुमार ने दिल्ली, मुनि आलोक कुमार ने छापर सेवाकेन्द्र के लिये विहार किया।

तेरापंथ दिग्दर्शन महाप्रज्ञ को भेंट

बीदासर 11 फरवरी।

तेरापंथ धर्मसंघ के केन्द्र एवं बर्हिविहारी साधु-साध्वियों के वार्षिक कार्यक्रमों का ऐतिहासिक संकलन तेरापंथ दिग्दर्शन बुधवार को आचार्य महाप्रज्ञ एवं युवाचार्य महाश्रमण को समर्पित की गई। तेरापंथ दिग्दर्शन जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा द्वारा प्रतिवर्ष प्रकाशित होने वाली संघीय इतिहास सुरक्षा की अभिनव कड़ी है। तेरापंथ दर्शन मनीषी मुनि सुमेरमल 'लाडनूं' एवं मुनि उदित कुमार द्वारा सम्पादित तेरापंथ दिग्दर्शन को जैन श्वेताम्बर तेरापंथ महासभा के उपाध्यक्ष जसराज बुरड़ ने आचार्य महाप्रज्ञ को भेंट की।

कोलकाता तेयुप महाप्रज्ञ दर्शनार्थ पहुंचे

बीदासर 11 फरवरी।

कोलकाता तेरापंथ युवक परिषद बुधवार को आचार्य महाप्रज्ञ के सान्निध्य में पहुंची। परिषद के अध्यक्ष कुलदीप मणोत, जगत सिंह चोरड़िया, जयदीप दुगड़, चंद्रप्रकाश गोलछा ने यहां पहुंचकर आचार्य महाप्रज्ञ, युवाचार्य महाश्रमण, साध्वी प्रमुखा कनकप्रभा के दर्शन कर तेयुप प्रभारी मुनि दिनेश कुमार को परिषद की गतिविधियों की अवगति दी।

अशोक सियोल

99829 03770